**ओ३म्**

**‘ईश्वर के मुख्य गुण, कर्म व स्वभाव’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

महर्षि दयानन्द सरस्वती (1825-1883) ने अपने सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों में ईश्वर के स्वरूप पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला है। इसके आधार पर हम ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव को भी जान सकते हैं। यह हम सभी का आवश्यक कर्तव्य भी है, इसलिए कि जिस ईश्वर ने हमारे लिए इस सृष्टि को बनाया और जो हमारा माता, पिता व आचार्यवत् पालन कर रहा है, हम उसका उपकार माने और उसका उचित रीति से धन्यवाद व आभार व्यक्त करें। अतः ईश्वर को जानना हमारे सबके लिए आवश्यक है। ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव को जान लेने पर संसार के सम्बन्ध में काफी कुछ जान लिया जाता है। ईश्वर के गुणों की चर्चा करें तो ईश्वर जड़ पदार्थ न होकर वह एक सच्चिदानन्दस्वरूप गुणों वाली सत्ता है। इसका अर्थ यह है कि ईश्वर की सत्ता है, वह चेतन पदार्थ है तथा वह सदा सर्वदा सब दिन व काल में आनन्द में अवस्थित रहता है। उसे कदापि दुःख व अवसाद आदि नहीं होता जैसा कि जीवात्माओं व मनुष्यों को होता है। चेतन का अर्थ है कि ज्ञानयुक्त वा संवेदनशील सत्ता। प्रकृति व सृष्टि जड़ होने के कारण इसमें ज्ञान का सर्वथा अभाव होता है। ईश्वर निराकार भी है। निराकार का अर्थ होता है कि जिसका आकार न हो। हमारे शरीर का एक आकार है जिसका कैमरे से चित्र बनाया जा सकता है। आकार को आकृति कह सकते हैं। हमारे शरीर की तो आकृति है परन्तु शरीर में स्थित जो जीवात्मा है उसका आकार स्पष्ट नहीं होता। वह एक बहूत सूक्ष्म बिन्दूवत है जो सत, रज व तम गुणों वाली परमाणु रूप प्रकृति से भी सूक्ष्म है। अतः जीवात्मा का निश्चित आकार वा आकृति नहीं है परन्तु एक देशीय सत्ता होने के कारण हमारे कुछ विद्वान जीवात्मा का आकार मानते हैं तथा कुछ नहीं भी मानते। इसका अर्थ यही है कि जीवात्मा एक एकदेशीय, ससीम व अति सूक्ष्म सत्ता है जिसके आकार का वर्णन नहीं किया जा सकता। अतः जीवात्मा निराकार के समान ही है परन्तु एक देशीय होने के कारण उसका आकार एक सूक्ष्म बिन्दू व ऐसा कुछ हो सकता है व है, इसलिए कुछ विद्वान जीवात्मा को साकार भी मान लेते हैं।

ईश्वर निराकार है, इसका अर्थ है कि उसका कोई आकार व आकृति नहीं है। निराकार का एक कारण उसका सर्वव्यापक व अनन्त होना भी है। ईश्वर इस समस्त चराचर जगत व ब्रह्माण्ड में सर्वान्तर्यामी स्वरूप से व्यापक है। उसकी लम्बाई व चैड़ाई अनन्त होने व उसके मनुष्य के समान आंख, नाक, कान, मुख व शरीर न होने के कारण वह अस्तित्ववान् होकर भी आकर से रहित अर्थात् निराकार है। ईश्वर का एक गुण सर्वज्ञ होना भी है। सर्वज्ञ का अर्थ है कि वह अपने, जीवात्मा और सृष्टि के विषय में भूत व वर्तमान का सब कुछ जानता है और उसे भविष्य में कब क्या करना है वह भी जानता है। वैदिक सिद्धान्त है कि ईश्वर त्रिकालदर्शी है जिसका अर्थ है कि ईश्वर जीवों के कर्म आदि व्यवहारों की अपेक्षा से भूत, भविष्य व वर्तमान आदि को जानता है। ईश्वर में ऐसे असंख्य व अनन्त गुण हैं जिसे वेदाध्ययन व सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन कर जाना जा सकता है।

ईश्वर के कर्मों की चर्चा करने पर हम पाते हैं कि उसने सत्, रज व तम गुणों वाली अत्यन्त सूक्ष्म त्रिगुणात्मक प्रकृति से इस समस्त दृश्यमान जगत सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, मनुष्यादि प्राणियों की रचना की है और वही इसकी व्यवस्था, संचालन व पालन कर रहा है। यह सभी कार्य ईश्वर के कर्म व कर्तव्यों में आते हैं। ईश्वर का दूसरा मुख्य कर्म व कर्तव्य अनन्त जीवों को उनके पूर्वजन्म व कल्प आदि के शुभ व अशुभ कर्मों का न्यायोचित फल अर्थात् सुख व दुःख देना है। जीवों को उनके कर्मानुसार सुख व दुःख रूपी फल सहित उनके श्रेष्ठ कर्मों के अनुसार मोक्ष प्रदान करने के लिए ही ईश्वर ने सृष्टि की रचना की है। इससे यह ज्ञात होता है कि मनुष्यों सहित इतर समस्त योनियों में जीवात्माओं के जन्म व मृत्यु आदि की व्यवस्था ईश्वर करता है। ईश्वर सभी जीवों की जीवात्माओं में शुभ कर्म करने की प्रेरणा भी करता है। मनुष्य जब कोई अच्छा काम करता है तो उसे प्रसन्नता होती है और जब बुरा चोरी आदि काम करता है तो भय, शंका व लज्जा आदि अनुभव होती है, यह अनुभूतियां व प्रेरणायें ईश्वर की ओर से ही होती है जिसका उद्देश्य सद्कर्मों को करवाना व अशुभ कर्मों से छुड़ाना है। यह सभी ईश्वर द्वारा किये जाने वाले कर्म हैं। ईश्वर ने इस सृष्टि व ब्रह्माण्ड को धारण किया हुआ है तथा सृष्टि की आयु 4.32 अरब वर्ष होने पर वह इसकी प्रलय करता है। यह सब ईश्वर के मुख्य कर्म कहे जाते हैं। ईश्वर सर्वशक्तिमान है और इस कारण वह अपने किये जाने वाले सभी कार्यों को अकेला ही करता है। उसे अपने कार्यों में किसी अन्य सहायक अर्थात् विशेष पुत्र व सन्देशवाहक की आवश्यकता नहीं होती। ईश्वर के कुछ कर्मों को जानने के बाद अब हम ईश्वर के स्वभाव के विषय में विचार करते हैं।

ईश्वर का स्वभाव न्यायकारी, दयालु व सभी जीवों को सुख प्रदान करना है। अपने इसी स्वभाव के कारण वह जीवों के लिए सृष्टि की रचना कर उन्हें उनके कर्मानुसार नाना योनियों में जन्म देता है। दुष्टों को वह रूलानेवाला है। जो मनुष्य दुष्ट स्वभाव वा प्रकृति के होते हैं, ईश्वर उनको भय, शंका व लज्जा के रूप में व जन्म-जन्मान्तर में उनके कर्मों के अनुसार दुःख रूपी फल देकर रूलाता है। अच्छे व शुभ कर्म करने वालों को सुख देकर भी वह उन्हें आनन्दित करता है। यह उसका स्वभाव है। वह सभी जीवों के साथ न्याय करता है। उसके न्याय से डर की ही लोग पाप के मार्ग को छोड़कर धर्म व पुण्य कर्मों को करते हैं। हमें लगता है कि जो लोग अनावश्यक हिंसा, मांसाहार, मदिरापान, भ्रष्टाचार व कालेधन का संग्रह आदि करते हैं वह घोरतम अविद्या से ग्रस्त हैं। उनकी आत्मायें मलों से आवृत अर्थात् ढकी हुई हैं। जैसे दर्पण पर मल जम जाये तो उसमें आकृति व छति दिखाई नहीं देती, इसी प्रकार दुष्ट आत्मायें होती हैं जिन पर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अशुभ इच्छा, द्वेष रूपी अविद्या का गहरा आवरण उनकी आत्माओं को ढक लेता है और आत्मा ईश्वर से मिलने वाली प्रेरणाओं को या तो सुनता ही नहीं या उन्हें अनसुना कर देता है। इससे आत्मा का घोर पतन होने के साथ उसका भविष्य व परजन्म दुःखों के भोगने का आधार बनता है। विवेकी व विद्वान इन सब बातों को जानकर ही असत्य को छोड़ सत्य मार्ग पर चलते हुए ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना का मार्ग वरण करते हैं और योगाभ्यास आदि करके समाधि को सिद्ध कर ईश्वर साक्षात्कार कर विवेक को प्राप्त होकर जन्म व मरण के चक्र व बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। जीवों को आनन्दमय मोक्ष की प्राप्ति के लिए ही ईश्वर ने इस सृष्टि को रचा है जिसमें ऋषि दयानन्द, लेखराम, गुरुदत्त, श्रद्धानन्द व दर्शनानन्द जी जैसी आत्मायें मुमुक्षु बन कर कल्याण को प्राप्त होती है।

हम आशा करते हैं कि पाठक इस लेख द्वारा ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव को कुछ जान सकेंगे। इसी के साथ लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**Top of Form

**ओ३म्**

**‘हम सब ईश्वर की सन्तान हैं व ईश्वर हमारा सच्चा माता व पिता है’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

हमारे माता-पिता कौन हैं? जन्म देने वाले व उसमें सहायक को माता-पिता कहते हैं। हमें अपनी माता से जन्म मिलता है, वह हमारा निर्माण करती है, इसलिए वह हमारी माता कहलाती है। पालन करने से पिता कहलाता है। माता-पिता तो हमारे जन्म में सहायक होते हैं किन्तु हमारा शरीर बनाना और उसमें जीवात्मा को प्रविष्ट करने का काम तो सर्वव्यापक व सृष्टिकर्ता ईश्वर ही करता है। वही हमारी आत्मा को पहले पिता के शरीर में, फिर माता के शरीर में भेजता है और माता के शरीर में हिन्दी महीनों के अनुसार 10 महीने की अवधि में शरीर का निर्माण पूरा होता है, उसके बाद ईश्वर की व्यवस्था से ही हमारा जन्म होता है। अतः हमारा माता व पिता दोनों ईश्वर ही है।

जीवन में ज्ञान का सबसे अधिक महत्व है। जीवात्मा ज्ञान का ग्राहक है और ज्ञान का दाता ईश्वर है। बच्चों को ज्ञान माता-पिता व आचार्य से मिलता है। माता-पिता व आचार्य को अपने अपने माता-पिता व आचार्यों से मिला है। सृष्टि के आरम्भ में सभी मनुष्य ईश्वर द्वारा अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न हुए थे। हम भी मनुष्य व किसी अन्य योनि में उत्पन्न हुए होंगे। हो सकता है कि इसी पृथिवी पर हुए हों या इस ब्रह्माण्ड की किसी अन्य पृथिवी पर। सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों के भौतिक शरीरधारी माता-पिता व आचार्य नहीं थे। उन्हें ज्ञान का देने वाला केवल ईश्वर ही सिद्ध होता है। महर्षि दयानन्द ने इस विषय का गहरा मन्थन किया था और अपनी समाधि बुद्धि से हल निकाला कि सृष्टि के आरम्भ में सभी मनुष्यों वा ऋषियों को ज्ञान ईश्वर से वेदों के द्वारा प्राप्त होता है। यदि ईश्वर ज्ञान न दे तो मनुष्य स्वयं ज्ञान प्राप्त व उत्पन्न नहीं कर सकते। ईश्वर वेदों का ज्ञान देता है, बोलने के लिए भाषा का ज्ञान देता है और ऋषियों को वेदों का ज्ञान शब्द-अर्थ-सम्बन्ध सहित देता है। ईश्वर का ज्ञान माता-पिता की भांति मनुष्य रूप में प्रकट होकर ईश्वर द्वारा नहीं दिया जाता अपितु वह अपनी सर्वशक्तिमत्ता के गुण से सर्वान्तर्यामी रूप से जीवात्मा की आत्मा में प्रविष्ट कर देता है। इसी से जीवात्मा बोलना सीखते हैं तथा ऋषियों की संगति व उपासना कर उनसे वेदों सहित सभी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

मनुष्य को अपने जीवन निर्वाह के लिए भूमि व आवास सहित वस्त्र एवं भोजन चाहिये। पिपासा शान्त करने के लिए जल चाहिये। यह व अन्य सभी पदार्थ भी सृष्टि में सबको ईश्वर ने ही सुलभ करायें हैं। सृष्टि को ईश्वर ने बनाया है। सृष्टि सहित अन्न, रस, जल, वनस्पतियां, फल, फूल व दुग्धादि सभी पदार्थ ईश्वर की व्यवस्था से ही सबको प्राप्त हो रहे हैं। मनुष्य तो श्रम व पुरुषार्थ मात्र करता है परन्तु सभी पदार्थों की रचना व उत्पत्ति ईश्वर व उसके विधान के अनुसार ही हो रही है। अतः ईश्वर हमारा माता व पिता सिद्ध हो जाता है।

ईश्वर के प्रति हमारा भी कुछ कर्तव्य है जिसे हमें जानना चाहिये। वह कर्तव्य है कि उसके ज्ञान वेद को जानना, पढ़ना व समझना तथा दूसरों को पढ़ाना, सुनाना व बताना। ऐसा करके ही मनुष्य अविद्या से मुक्त हो सकता है। अविद्या रहेगी तो क्लेश रहेंगे। अविद्या दूर करने का एक ही उपाय है कि हम वेद, वैदिक साहित्य जिसमें सत्यार्थ प्रकाश सहित ऋषि दयानन्द के सभी ग्रन्थ सम्मिलित हैं, सभी को नियमित रूप से पढ़ने चाहियें। जो जितना अध्ययन व स्वाध्याय करेगा उसी अनुपात में उसकी अविद्या दूर हो सकती है। ईश्वर के प्रति हमारा यह भी कर्तव्य है कि ईश्वर से हमें जो वस्तुयें प्राप्त हुई हैं उसके लिए हम उसका धन्यवाद करें। धन्यवाद का तरीका है कि हम उसकी स्तुति करें, उससे प्रार्थना करें और उसकी उपासना अर्थात् उसका ध्यान, उसके स्वरुप व गुणों का चिन्तन व मनन करें। यदि हम यथार्थ रूप में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करेंगे तो निश्चित ही हमारा कल्याण होगा। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर का धन्यवाद करने के लिए सन्ध्या व पंच महायज्ञों का विधान कर उसकी विधि भी हमें प्रदान की है। हमें उसे जान व समझ कर उसके अनुरूप अपने कर्तव्यों का पालन करना है।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्  
‘क्या जात-पात मिटाई जा सकती है?’**

[](https://www.facebook.com/photo.php?fbid=1208717849183279&set=pcb.1208718082516589&type=3)आर्यसमाज की पहली पीढ़ी के विद्वानों में एक विद्वान प्रो. सन्तराम जी बी.ए. भी हुए हैं। आप स्वामी श्रद्धानन्द जी के समकालीन थे। आपने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। पं. गुरुदत्त ग्रन्थावली के हिन्दी अनुवादक भी आप ही थे। इस समय आपकी एक लघु पुस्तक हमारे सम्मुख है। इस पुस्तक का प्रकाशन श्री रवीन्द्र कुमार मेहता, दिल्ली ने अपने प्रकाशन ‘सरस्वती साहित्य संस्थान, दिल्ली-92’ से कराया है। पुस्तक में 16 पृष्ठों की सामग्री है। प्रकाशन वर्ष नहीं दिया गया है। आज हम इसी पुस्तक से लेखक के कुछ विचारों को पाठकों के समाने रख रहे हैं जिससे वह इस पर चिन्तन कर सकें। लेखक महोदय लिखते हैं ‘जात-पात मानने वाले हिन्दुओं में प्रत्येक हिन्दू दूसरे हिन्दू के लिए अछूत है। अन्तर केवल अछूतपन के अंश में है। कोई अधिक अछूत है और कोई कम। एक के हाथ से आप पानी लेकर तो पी सकते हैं, परन्तु उसके हाथ की बनी रसोई नहीं खा सकते। दूसरे के हाथ की रसोई तो खा सकते हैं, परन्तु उसके साथ बेटी-व्यवहार नहीं कर सकते। इसी प्रकार आगे चलते-चलते ऐसे हिन्दू आ जाते हैं, जिनके साथ रोटी बेटी व्यवहार तो दूर, जिन्हें छू जाने से भी आप अपवित्र हो जाते हैं।

पंजाब में सिक्खों ने भंगियों और चमारों के सिर पर लंबे केश रखवा कर उन्हें सिक्ख तो बनाया परन्तु जात-पात को न मिटाया। इसलिए सिक्ख बनकर भी वे ‘पांचवें पौड़े’ के सिक्ख अर्थात् अछूत के अछूत ही रहे। इसी प्रकार आर्य समाज ने तथा-कथित अछूतों को शुद्ध करके ‘महाशय’ और ‘भक्त’ नाम तो दिया, परन्तु उनके साथ बेटी-व्यवहार न किया। इसलिए वे महाशय कहला कर भी अटूत ही रहे। इनके बाद महात्मा गांधी ने अछूतों का नाम ‘हरिजन’ रख दिया। परन्तु इससे अछूतपन दूर होने के स्थान में ‘हरिजन’ का अर्थ ही अछूत हो गया। फिर डाक्टर अम्बेडकर के दबाव से भारत सरकार ने इनका नाम ‘परिगणित जातियों’ या शड्यूल कास्ट रख कर इन्हें कुछ राजनीतिक सुविधाएं दीं। इससे कुछ इने गिने थोड़े से व्यक्तियों को आर्थिक लाभ तो हुआ, परन्तु हिन्दू समाज में जन्ममूलक ऊंच-नीच की जो बिमारी पड़ी है, जिससे प्रत्येक जाति अपने को एक अलग राष्ट्र समझती और अपने आर्थिक व राजनीतिक हित दूसरी जातियों से अलग मानती है, वह कम नहीं हुई। सब अछूतों को सरकारी नौकरियां भी नहीं मिल सकती। सरकारी नौकरी न पाने वाला कोई भंगी हलवाई, पंसारी या आटे-दाल की दुकान खोलकर आजीविका नहीं कमा सकता। कोई सवर्ण हिन्दू उसके यहां से सौदा नहीं लेगा।

इसके अतिरिक्त एक और बात भी है। एक अनपढ़ और दरिद्र अछूत तो अपना अपमान सहन कर लेता है, परन्तु एक सुशिक्षित एवं संपन्न अछूत अपना सामाजिक अपमान सहन नहीं कर सकता। जातपात की मनोवृत्ति क्योंकि हिन्दू समाज में वैसी ही वैसी है, इसलए पढ़े-लिखे हरिजन सवर्णों से अलग ही रिपब्लिकन पार्टी जैसे अपने दल बना रहे हैं, इससे एकता के स्थान में विघटन ही बढ़ा है। चाहिए तो यह था कि अछूत और सवर्ण का भेदभाव दूर होकर सब हिन्दू एक संगठित समाज बन जाते, परन्तु बात उलटी हो रही है।

आज प्रत्येक हिन्दू अपनी जाति के प्रत्याशी को ही क्यों मतदान करता है? मद्रास में ब्राह्मण और ब्राह्मणेतर का, केरल में नायर और इड़वा का, उत्तर प्रदेश में कायस्थ और ब्राह्मण का, हरियााणा में जाट और बनिए का जो झगड़ा है, उसका कारण यही जात-पात नहीं तो और क्या है? किसी कार्यालय में जिस जाति का व्यक्ति सर्वोच्च अधिकारी होता है, वह अपनी ही जाति के लोगों को लाभ पहुंचाने का यत्न करता है, मानो दूसरी जातियों के लोग किसी दूसरे ही राष्ट्र के हों।’

उपर्युक्त पंक्तियों में जात-पांत पर प्रो. सन्तराम जी के कुछ विचार प्रस्तुत किये हैं। इससे ज्ञात होता है कि हिन्दू समाज अनेकानेक जातियों में बंटा हुआ। सब अपने को दूसरांे से बड़ा मानते हैं और एक ही जाति में भोजन व बेटी आदि का व्यवहार करते हैं। इसका समाज पर जो दुष्प्रभाव हो रहा है वह विद्वानजन जानते ही हैं। इससे समाज कमजोर हो रहा है और हिन्दू विरोधी विधर्मी इसका लाभ उठा रहे हैं। इस छूआछूत और ऊंच-नीच की समस्या ने ही समाज को तोड़ा और विधर्मियों ने धर्मान्तरण के कार्य में सफलतायें पायीं और आज भी सफल हो रहे हैं परन्तु हिन्दुओं पर इसका कोई असर नहीं पड़ रहा है। जनसंख्या के आंकड़ों में निरन्तर बदलाव आ रहा है जिससे हिन्दुओं का भविष्य व अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लग रहे हैं परन्तु क्या आर्यसमाज और क्या हिन्दू, सभी इससे बेखबर होकर अपने स्वार्थ, अपने अपने लाभ, पद व धन लिप्सा में मग्न हैं। आज हमारे पास न तो स्वामी दयानन्द हैं और न ही स्वामी श्रद्धानन्द। ऐसे में स्थिति निराशा की ओर बढ़ रही है। पाकिस्तान और बंगलादेश में हिन्दुओं से जो व्यवहार किया जाता है, उससे भी हम शिक्षा नहीं ले रहे हैं। जो थोड़ी बहुत कसर थी वह भी वोट बैंक की राजनीति ने पूरी कर दी है। हमें लगता है कि आज का समाज नास्तिकता के शीर्ष मुकाम पर पहुंच गया है। जहां से लौटाना सम्भव नहीं है। महर्षि दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द जी बनाने के लिए आर्यसमाज ने अनेक गुरुकुल खोले थे परन्तु वह भी आधुनिकता से ग्रसित हुए निरर्थक से लगते हैं। इस स्थिति में डा. रघुवीर वेदालंकार जैसे विद्वान ही आर्यों का मार्गदर्शन कर सकते हैं। परन्तु होता यह है कि यदि कोई विद्वान कुछ कहता भी है तो वह प्रवचन बन कर रह जाता है जिसे सुनने के कुछ देर बाद भुला दिया जाता है। आर्यसमाज में पदों आदि के लिए मुकदमें लड़ने व उस पर भारी व्यय का प्रबन्ध आसानी से हो जाता है परन्तु समाज के सामने जो समस्यायें हैं उस पर चर्चा करने का किसी को अवकाश ही नहीं है। अतः इस समस्या को ईश्वर पर ही छोड़ देना उचित है। वह जैसा करेगा हो जायेगा?

हम कुछ विद्वानों के विचार देकर इस लेख को विराम देते हैं। आर्यसमाज के शीर्ष विद्वान व नेता महात्मा नारायण स्वामी जी ने कहा है ‘जात-पांत का बंधन हिन्दू जाति के लिए कलंक का टीका है। इसने सारी जाति को छिन्न-भिन्न कर रखा है। हिन्दू जाति में परस्पर घृणा और द्वेष का प्रचार इसी की कृपा का फल है। इसलिए आर्य जाति की उन्नति इस बंधन के तोड़ने पर ही अवलम्बित है। मैं हृदय से चाहता हूं कि जाति-पांति तोड़क मंडल को इस कार्य में सफलता पाप्त हो।’ भगवान् बुद्ध के वचन हैं ‘गंगा-यमुना आदि नदियां जैसे समुद्र में मिलकर अपनी स्वतन्त्र सत्ता और नाम खो देती हैं, वैसे ही सब जातियों के मनुष्य सत्य-धर्म ग्रहण करते ही अपनी जाति और गोत्र खोकर एक हो जाते हैं।’ डा. भीमराव अम्बेडकर कहते हैं ‘जात-पांत का तोड़ना ही हिन्दुओं का असली संगठन है। जात-पांत को मिटाने से जब संगठन हो गया, तो फिर ‘शुद्धि’ की कोई आवश्यकता न रह जाएगी। हिन्दू समाज जात-पांत को बनाए रख कर अपनी रक्षा नहीं कर सकता।’ डा. अम्बेडकर जी के शब्दों में जो सन्देश है वह हमें आज की आवश्यकता लगता है। इसी के साथ लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

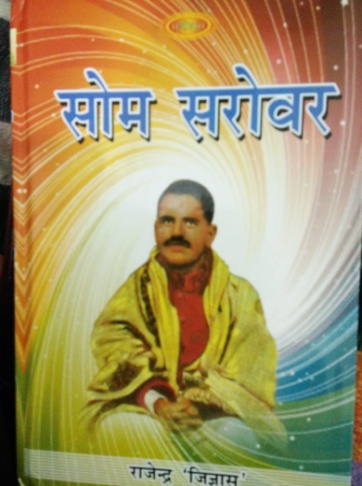
**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘ईश्वर की छाया में आकर सभी मनीषी पूर्ण मनीषी होते हैं’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

पं. चमूपति आर्यसमाज के शीर्ष विद्वान थे। आपने सामवेद के चुने हुए मन्त्रों पर **‘‘सोम सरोवर”** नाम से भक्ति भाव पूर्ण से सिक्त रचना की है। महाशय कृष्ण ने इस रचना के विषय में कहा था कि यह एक ऐसी रचना है जिसे नोबेल पुरस्कार दिया जाने चाहिये था। परन्तु वेदों के प्रति पक्षपातपूर्ण मत इसमें मुख्य रूप से बाधक रहा। इसी पुस्तक से एक मन्त्र स्वाध्याय, चिन्तन एवं मनन हेतु प्रस्तुत कर रहे हैं। मन्त्र हैः

**इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः।**

**इन्दो रुचाभि गा इहि।**

**वेद व्याख्यान**

ऐ मेरे मन ! तेरा ज्ञान बहुत थोड़ा है। तू जान सकता ही कितना है? तू ज्ञानी नहीं, ज्ञान का पात्र है। तुझ में प्रकाश है पर बहुत कम। तू चांद है, सूर्य नहीं। तेरा प्रकाश अपना नहीं, किसी का है। तो तू प्रकाश वाले के सम्मुख क्यों नहीं होता? ज्ञानियों की संगति में बैठ। उन का नियन्त्रण अपने ऊपर ले। ये तुझे मांज देंगे। कोई कलंक, पाप-ताप का कोई लेश तेरी आत्मा पर रहने न देंगे। तेरी बुद्धि का जंग उतार देंगे। तेरी मनन-शक्ति को निर्मल कर देंगे। तेरी प्रज्ञा की धार को तेज कर देंगे। उन्हें क्या करना है? उन के पास बैठने से तू अपने आप मंजता जायगा।

यह प्रक्रिया एक दिन नहीं, निरन्तर बहती रहे। तभी तो ज्ञान की सेवा-शुश्रुषा की अविरल धारा निरन्तर बहती रहे। तभी तो ज्ञान की खेती लहलहा उठती है। उस में हरियावल आती है। मन के लिए अन्न पैदा होता है-मानसिक अन्न अर्थात् ज्ञान।

मनीषी महानुभावों के नित्य के सत्संग से ही प्रज्ञा में प्रकाश बढ़ता है। द्वितीया के चांद में जितनी अधिक सूर्य की छाया पड़ेगी, उस में उतनी ही प्रकाश की कला बढ़ती जायगी। एक दिन आयगा जब उस की प्रज्ञा की पूर्णिमा होगी।

मेरे मन ! तू मनीषी होना चाहता है, तो मनीषियों के हाथ में पड़ जा। ये तुझे ऐसा स्वच्छ करेंगे जैसे गौ बछ़ड़े को। गौ बछड़े को चूमती है, चाटती है, अपनी पवित्र जीभ से उस का संपूर्ण मल हर लेती है। उपदेश-उपदेश में ही इन की जीभ वह काम कर जायगी जो गौ की जबान बछड़े के शरीर पर करती है।

फिर सब मनीषियों का एक मनीषी तो पूर्ण-प्रज्ञ परमेश्वर है। तू उस के सम्मुख हो। उस की कला से कलावान् हो। फिर तेरी ज्ञान-प्रभा के क्या कहने हैं। वास्तविक ज्ञान-भानु वही है। उसी की छाया में आ कर सभी मनीषी पूर्ण मनीषी होते हैं।

हम आशा करते हैं कि पाठक इस मन्त्र व्याख्यान को पसन्द करेंगे और इसमें निहित शिक्षा का लाभ उठायेंगे। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस प्रो. डा. नवदीप कुमार के विद्वतापूर्ण व्याख्यान के साथ श्रद्धापूर्वक वातावरण में सम्पन्न’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 आर्यसमाज धामावाला उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून की प्रमुख आर्यसमाज है जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द जी के करकमलों द्वारा हुई थी। स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी के नाना श्री कृपाराम जी इस समाज के प्रथम प्रधान रहे। अथर्ववेद, सामवेद भाष्यकार एवं अनेक प्रमुख वैदिक ग्रन्थों के रचयिता पं. विश्वनाथ विद्यालंकार जी इसी समाज से जीवन पर्यन्त जुड़े रहे। आचार्य बृहस्पति जी भी गुरुकुल वृन्दावन के आचार्य व कुलपति रहे और इसी आर्यसमाज से जुड़े रहे। उनके दर्शन करने, उपदेश सुनने व महाविद्यालय में धर्म व संस्कृति पर उनका लेक्चर सुनने का भी हमें अवसर व सौभाग्य प्राप्त हुआ है। पं. प्रकाशवीर शास्त्री, स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती, डा. भवानी लाल भारतीय, शास्त्रार्थ महारथी ओम्प्रकाश शास्त्री, खतौली, स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती, डात्र रघुवीर वेदालंकार, आचार्य विद्याादेव, डा. महावीर जी, आचार्य सत्यव्रत राजेश, डा. दिनेश कुमार शास्त्री, प्रा. अनूप सिंह, श्री धर्मेन्द्र सिह आर्य आदि अनेक विद्वानों को इस समाज में समय समय पर सुनने का अवसर भी हमें प्राप्त हुआ है। सन् 1994-95 में लगभग 15 महीनों तक आर्यसमाज के सत्संगों का संचालन करने का अवसर भी हमें मिला। सन् 1970 में हम अपने एक आर्यसमाजी मित्र श्री धर्मपाल सिंह की प्रेरणा से इस समाज के सदस्य बने थे। आज इसी आर्यसमाज ने स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी का बलिदान दिवस समारोह ‘श्री स्वामी श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम’ में आयोजित किया। हमें भी निमंत्रण मिला तो हम भी इस आयोजन में पहुंच गये।

आज का आयोजन यज्ञ, भजन व गीतों से आरम्भ हुआ। आश्रम की कन्याओं व बालकों ने भजन गाये। इस अवसर पर आर्य भजनोपदेशक श्री धर्मसिंह जी भी पधारे हुए थे, उनके भी भजन हुए। मुख्य प्रवचन देहरादून के डी.ए.वी. महाविद्यालय के राजनीति विभाग के विभागाध्यक्ष व प्रोफेसर रहे डा. नवदीप कुमार जी का हुआ। अपने सम्बोधन में डा. नवदीप कुमार जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हरिद्वार में कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल की स्थापना की पृष्ठभूमि व उसके स्वर्णिम इतिहास पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल खोलने के लिए आठ हजार रूपये का धनसंग्रह का लक्ष्य रखा था। इसके लिए उन्होंने भिक्षा व दान मांग कर धन संग्रह किया। स्वामी जी जहां भी जाते और लोगों को उपदेश कर अपनी गुरुकुल स्थापना की योजना बताते तो लोग उनका स्वागत करते और सहयोग करते थे। इस प्रकार 7 महीनों में लक्ष्य से कहीं अधिक तीस हजार रूपये की धनराशि आपके द्वारा एकत्रित कर ली गई। इसके बाद स्वामीजी बिजनौर के एक भूपति चौधरी अमन सिंह जी से मिले और उन्हें अपनी गुरुकुल की योजना से परिचित कराया। वह तत्काल अपने दो गांव स्वामी जी को देने के लिए तैयार हो गये। उनका एक गांव तो कांगड़ी था और दूसरा उसका निकटवर्ती था। स्वामी जी इन गांवों व इसकी समस्त भूमि आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के नाम पर पंजीकृत करा दी। गुरुकुल में किन बच्चों को प्रविष्ट किया जाये तो इसके लिए आपने पहले अपने दो पुत्रों हरिश व इन्द्र को चुना और उन्हें प्रविष्ट किया। डा. नवदीप कुमार जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने स्वामी दयानन्द जी के संकल्पों के अनुरुप गुरुकुल खोला। विद्वान वक्ता ने कहा कि वैदिक मान्यता के अनुसार बच्चे सभी शूद्र होते हैं। संस्कार से ही वह द्विज बनते हैं। उन्होंने कहा कि गुरुकुल का वातावरण ऐसा था कि किसी बच्चे को उसकी जन्मना जाति का पता नहीं होता था और न ही किसी को उसका प्रयोग करने की छूट थी। बच्चों का वर्ण शिक्षा की समाप्ती पर निर्धारित किये जाने की प्रथा हमारे देश में रही है। यह हमारे देश की प्रोचीन परम्परा थी।

डा. नवदीप कुमार ने अपने सम्बोधन में गांधी जी की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि जब गांधी जी अफ्रीका में आन्दोलन कर रहे थे तब स्वामी श्रद्धानन्द और उनके शिष्यों ने मजदूरी करके धन इकट्ठा किया और एकत्रित बड़ी धनराशि गांधी जी को अफ्रीका भेजी थी। विद्वान वक्ता ने कहा कि उन दिनों **‘सप्त सरोवर’** के पास एक विद्युत उत्पादन परियोजना और सिंचाई के लिए एक डाम बन रहा था। गांधी जी के लिए धन संग्रह का कार्य महात्मा मुंशीराम और उनके सभी शिष्यों ने मजदूरी करके किया। उन दिनों उन्होंने मजदूरी करके 1500 रूपये एकत्र किये जो आज के हिसाब से बहुत बड़ी राशि थी। आजादी के बहुत बड़े नेता गोपाल कृष्ण गोखले ने जब स्वामी श्रद्धानन्द और उनके ब्रह्मचारी शिष्यों द्वारा मजदूरी करके धन संग्रह की बात सुनी तो उनकी आंखों से आंसू टपकने लगे थे। डा. नवदीप जी ने कहा कि गांधी जी को जब यह धनराशि मिली तो उन्होंने उसी दिन स्वामी श्रद्धानन्द जी को धन्यवाद का पत्र लिखा था। डा. नवदीप कुमार जी ने कहा कि गांधी जी ने अपने बड़े पुत्र देवदास को भी गुरुकुल में भर्ती किया था, ऐसा उन्होने पढ़ा है। गुरुकुल की शिक्षा अपने उद्देश्य में सफल रही। यहां वेदों के बड़े बड़े विद्वान व स्वतन्त्रता सेनानी उत्पन्न हुए। उन्होंने बताया कि रैम्जे मैकडानल गुरुकुल में आये थे और स्वामी जी के आचरण और विचारों से बहुत प्रभावित हुए थे। उनके साथ उत्तर प्रदेश के गवर्नर मेस्टन भी आये थे। इन अंग्रेजों ने सुना था कि गुरुकुल में अंग्रेजों के विरुद्ध बम बनाये जाते थे। इन अधिकारियों का गुरुकुल आना इन आरोपों की जांच करना था। उन्होंने कहा कि यहां पढ़ने वाले बच्चे उन दिनों बड़े बड़े विद्वान बने और उन्होने सच्चा ज्ञान प्राप्त किया। डा. नवदीप कुमार जी ने कहा कि जब स्वामी जी ने संन्यास लिया तो वह महात्मा मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन गये, उन्होंने गुरुकुल छोड़ दिया और अपने जीवन की भावी नई भूमिका आरम्भ करने दिल्ली आ गये।

दिल्ली में स्वामी जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बनाये गये। स्वामी श्रद्धानन्द जी का प्रयास था देश के सभी लोग गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार आर्य हो जायें, कोई अनार्य न रहे। स्वामी जी ने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आर्य समाज के संगठन को मजबूत बनाने का कार्य किया और इसके लिए घोर पुरुषार्थ किया। डा. नवदीप कुमार जी ने बताया कि उनके समय में आर्यसमाज को अंग्रेजों द्वारा एक क्रान्तिकारी वा आतंकवादी संस्था माना जाता था। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी को गांधी जी का सत्य व अंहिसा का मार्ग पसन्द आया। विद्वान वक्ता ने सन् 1918 में आये अकाल व अन्न संकट की भी चर्चा की। ऐसी विकट अवस्था आने पर स्वामी जी व उनके सहयोगियों ने अपने जीवन को तपा कर अकाल पीड़ितों की रक्षा, सेवा व सहायता की। उन्होंने ऐसा इस लिये किया कि वह सच्चे मानव थे और सबको मानव मानते थे। उन्होंने यह श्रेष्ठ कार्य आजकल की तरह किसी प्रकार के वोट बैंक व अन्य किसी प्रलोभन के लिए नहीं किया था। डा. नवदीप जी ने सन् 1919 में रालेट एक्ट बनाये जाने की चर्चा की जिसका अर्थ था कि बिना आरोप, बिना वकील व दलील सुने लम्बे समय के लिए किसी भी देश भक्त को जेल की यातना देना। इस रालेट एक्ट के विरोध में देश भर में सत्याग्रह करने का निर्णय लिया गया। 30 मार्च सन् 1919 को देश भर में हड़ताल की गई। दिल्ली में आन्दोलन को सफल बनाने का दायित्व स्वामी श्रद्धानन्द जी को दिया गया। 20 मार्च सन् 1919 को दिल्ली में रालेट एक्ट के विरोध में जो हड़ताल हुई वह अभूतपूर्व अर्थात् **‘न भूतो न भविष्यति’** की उक्ति को चरितार्थ करने वाली थी। इस दिन दिल्ली में सड़को पर सारा यातायात रुक गया था। केवल सत्याग्रही वा आन्दोलनकारी जनता ही सड़को पर दिखाई दे रही थी। एक रेल कान्टीन खुली थी जहां आन्दोलनकारी पहुंचे और उसे बन्द कराने का प्रयास किया। इस विवाद में पुलिस ने गोलियां चला दीं जिसके परिणामस्वरूप कई हिन्दू व मुसलमान मारे गये। स्वामी जी ने वहां पहुंच कर हिंसक घटनाओं पर नियन्त्रण किया। वहां से वह चालीस हजार सत्याग्रहियों का नेतृत्व करते हुए आगे बढ़ते हैं। चांदनी चैक के पास गोरों की पुलिस ने उन्हें रोका। सैनिकों की बन्दुकें स्वामी जी पर तन गई। अंग्रेजों का वफादार एक गोरखा सैनिक चिल्लाया कि यदि एक कदम भी आगे बढ़ाया तो वह बन्दूक की संगीन स्वामी जी के सीने में घोंप देगा और उन्हें गोली मार देगा। डा. नवदीप कुमार जी ने कहा कि उस दिन स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो जाता। उनके बचने की कोई सम्भावना नहीं थी। दैवयोग व संयोग ही स्वामी जी उस दिन बचे। नवदीप जी ने कहा कि स्वामी जी और आगे बढ़े। स्वामी जी में ब्रह्मचर्य और योग का तेज और बल था। आगे बढ़कर अपनी छाती खोलकर वह सैनिको को ललकारते हुए बोले **‘मारो गोली’।** एक अंग्रेज अधिकारी अचानक वहां आ गया और उसने सैनिकों को पीछे हटने को कहा। इस प्रकार स्वामी जी का जीवन बच सका।

दिल्ली की इस घटना ने स्वामी जी को वहां का बेताज बादशाह बना दिया। दिल्ली के डा. अंसारी और हकीम अजमल खां स्वामी जी के मित्र थे। उन्होंने स्वामी जी को जामा मस्जिद में आकर लोगों को सम्बोधित करने का अनुरोध किया। स्वामी जी को सम्मान के साथ मस्जिद के मिम्बर जहां से मौलवी द्वारा नमाज पढ़ाई जाती है, ले जाया गया। स्वामी जी ने मिम्बर पर बैठकर मुस्लिम धर्म के बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए पहले वेद मन्त्र **‘ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता क्रतो बभूविथः। अघा ते सुम्नीमहे।।’** का उच्चारण किया। उन्होंने वहां एक घंटे तक अपना व्याख्यान दिया। जनता दत्त चित्त होकर उनका व्याख्यान वा उपदेश सुनती रही। विद्वान वक्ता ने कहा कि संसार के इतिहास की यह पहली घटना है जब कि जब किसी गैर मुसलमान ने जामा मस्जिद के मिम्बर पर से नमाजी मुस्लिम भाईयों को सम्बोधित किया था और वहां उपस्थित सभी मुस्लिम बन्धुओं ने स्वामी जी के एक एक शब्द को पूर्ण सम्मान के साथ सुना था। शान्ति पाठ के मन्त्र से स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने वक्तव्य को विराम दिया। डा. नवदीप कुमार जी ने इस घटना को इतिहास की एक आश्चर्यजनक घटना बताया।

डा. नवदीप कुमार जी ने आगे कहा कि 13 अप्रैल, 1919 को अंग्रेजों ने अमृतसर के जलियांवाला बाग में निहत्थे लोगों का नरसंहार किया जिसमें 1500 से अधिक लोग मारे गये और 1200 से अधिक लोग घायल हुए थे। अंग्रेजों ने वहां मार्शल ला लागू कर दिया था जो कि आतंक की स्थिति थी। लोग 100 मीटर दूरी तक अपने घरों में सड़कों पर रेंग कर जा सकते थे। इस नरसंहार के विरोध में कांगे्रस ने अमृतसर में अपना आगामी अधिवेशन करने का निर्णय किया। कांगेस के सामने समस्या थी कि अधिवेशन का कार्यभार किसको दिया जाये। स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम का प्रस्ताव हुआ। गांधी जी के मनाने पर स्वामी श्रद्धानन्द जी अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष का भार वहन करने के लिए तैयार हुए। स्वामी जी ने अपना स्वागत भाषण प्रथम वार हिन्दी में पढ़कर एक इतिहास की रचना की। अधिवेशन से चार-पांच दिन पहले अमृतसर में भारी वर्षा से सारा नगर पानी पानी अर्थात् जलमग्न हो रहा था। कांग्रेस के बड़े नेताओं ने अधिवेशन को स्थगित करने की बातें की परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा कि अधिवेशन निर्धारित तिथियों में ही होगा। स्वामी जी ने अमृतसर की जनता से अपील की कि वह अधिवेशन के प्रतिनिधियों को अपने घरों पर भारतीय अतिथि परम्परा के अनुसार ठहराये वा उनका आतिथ्य करे। एक परिवार से कम से कम एक प्रतिनिधि को ठहराने की अपील की गई। इस प्रयास ने सभी प्रतिनिधियों के भोजन व निवास की व्यवस्था की समस्या का उत्तम हल निकाला। विद्वान वक्ता डा. नवदीप कुमार जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी प्रेम व श्रद्धा के भण्डार थे। प्रत्येक व्यक्ति उनके आह्वान पर उनके आदेशों का पालन करने के लिए सहर्ष तैयार हो जाता था।

डा. नवदीप कुमार ने 5 फरवरी, 1922 को चौराचौरी काण्ड की भी विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि पुलिस ने वहां निहत्थे व शान्तिपूर्ण सत्याग्रहियों पर गोलियां बरसाईं। सत्याग्रही अपनी मशालें लेकर अंग्रेजों की पुलिस पर दौड़े। पुलिस के लोग थाने में घुस गये। सत्याग्रहियों ने पुलिस थाने में आग लगा दी जिससे 26 पुलिस वाले मर गये। गांधी जी ने बिना किसी से सलाह किए आन्दोलन बन्द करने की घोषणा कर दी। विद्वान वक्ता ने कहा कि 6 फरवरी 1922 से नो टैक्स आन्दोलन होना था। उन्होंने कहा कि देश सन् 1922 में ही आजाद हो जाता यदि गांधी जी आन्दोलन बन्द न करते। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गांधी को कहा कि आप गलत कर रहे हो। गांधी जी जिद्दी स्वभाव के मनुष्य थे। लाला लाजपतराय, मोतीलाल नेहरू और सी. आर. दास आदि अनेक नेताओं की अपीलें भी गांधी ने ठुकरा दी। डा. नवदीप कुमार जी ने कहा कि गांधी जी ने कुछ समय बाद कांग्रेस के मंच से अछूतोद्धार की चर्चा की। इस कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी उनके निकट आये। विद्वान वक्ता ने कहा कि गुरुकुल में अछूत शब्द का कहीं प्रयोग व प्रचलन नहीं था। वहां कोई अछूत व दलित नहीं था अपितु सब समान थे। गुरुकुल में कोई अपनी व दूसरे की जाति नहीं जानता था। आर्यसमाज ने अछूत शब्द को बदलकर दलित शब्द का प्रयोग किया और उनके उत्थान के कार्य को दलितोद्धार की संज्ञा दी। गांधी जी ने दलितोद्धार काम के लिए कांग्रेस द्वारा पैसे की व्यवस्था करने की मांग पर पीछे हट गये। इस कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी के गांधी जी से मतभेद हो गये। उन्होंने बताया कि कालीकट में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। गांधी जी के अति निकट, विश्वसनीय व प्रिय व्यक्तियों सौकत अली और मुहम्मद अली की विद्वान वक्ता ने चर्चा की और कहा कि कांग्रेस के अध्यक्ष मुहम्मद अली ने अधिवेशन में प्रस्ताव किया था कि 7 लाख भारतीय दलितों को मुसलमानों और हिन्दुओं में आधा आधा बांट दिया जाये। कांगेस में इसका विरोध करने वाला कोई नहीं था, शायद गांधी जी भी नहीं। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इसका विरोध करते हुए कहा कि दलित कोई गाजर व मूली नहीं अपितु हमारे भाई हैं। कोई ताकत दलितों को हमसे अलग नहीं कर सकती।

आर्य विद्वान एवं नेता डा. नवदीप कुमार जी ने बताया कि सन् 1924-25 में स्वामी जी ने दािलतोद्धार और शुद्धि के कामों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। स्वामी जी इस कार्य के कारण देश के सर्वमान्य नेता बन गये। आपके प्रयासों से आगरा के निकट के मलकान राजपूत जो कलमा पढ़ाकर मुसलमान बनाये गये थे परन्तु रीति रिवाजों और आचरण से हिन्दू थे, उनकी शुद्धि कर हजारों व लाखों को पुनः आर्यधर्म में दीक्षित किया। अपने वक्तव्य को आगे बढ़ाते हुए विद्वान वक्ता ने कहा कि 25 मार्च सन् 1926 को दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर एक मुस्लिम महिला असगरी बेगम तीन बच्चों के साथ उतरी। वह लोगों से पूछते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी के पास आयी और अपने दुःख बताकर उसने स्वेच्छा से हिन्दू वा आर्यधर्म स्वीकार करने की प्रार्थना की। उसने स्वामी जी से उसका शुद्धि संस्कार कराने की प्रार्थना की। स्वामी जी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर उसे व उसके बच्चों को आर्यसमाज दीवान हाल में शुद्ध किया। असगरी बेगम का नाम शान्ति देवी और बच्चों के नाम धर्मपाल और अर्जुन आदि रखे गये। उसे दिल्ली के वनिता आश्रम में रखा गया। उसने स्वामी जी बताया कि उसके दुश्मन बहुत हैं। उसने स्वामी जी को उसका पिता बनने की प्रार्थना की जिसे स्वीकार कर स्वामी जी उसके पिता बन गये। कुछ ही समय बाद वहां शान्तिदेवी के पिता और पति आ गये। शान्तिदेवी ने अपने पिता व पति का मुस्लिम धर्म में वापिस जाने का प्रस्ताव ठुकरा दिया। समाचार पत्रों ने इस घटना को राजनैतिक व साम्प्रदायिक स्वरूप देकर मुसलमानों को खूब भड़काया। पत्रों में स्वामी जी और आर्यसमाज पर मुकदमा चलाने की बातें होने लगी। अखबारों के दुष्प्रचार व ऐसे अन्य कारणों से स्वामी जी और आर्यसमाज के विरुद्ध ईष्र्या की अग्नि फैलाई गई जिससे कुछ लोग भड़क गये जिनमें से एक युवक अब्दुल रसीद भी था। विद्वान वक्ता ने कहा कि आज भी कुछ लोगों द्वारा भड़काने व जन्नत का सब्जबाग दिखा कर ही आतंकवादी बनाये जाते हैं। उन्होंने कहा कि अब्दुल रशीद भी भड़काने व जन्नत का लालच देने से स्वामी जी की हत्या करने के लिए तैयार हुआ था।

डा. नवदीप कुमार ने बताया कि स्वामी जी को उन्हीं दिनों वाराणसी प्रचार के लिए जाना पड़ा। वह एक दिन में चार चार जगहों पर लैक्चर देते थे। दिसम्बर, 1926 के महीने में बहुत ठण्ड पड़ रही थी। वृद्ध शरीर था जिस कारण स्वामी जी को ठण्ड लग गई और उन्हें निमोनिया हो गया। स्वामी जी रूग्णावस्था में ही दिल्ली आये, इलाज कराया और ठीक होने लगे। इन्हीं दिनों स्वामी जी को गुवाहटी जाना था। इसी बीच इन्द्रप्रस्थ गुरुकुल के लोग आये और आग्रह कर उन्हें तीव्र बुखार की स्थिति में ही 8 दिसम्बर 1926 को अपने साथ इन्द्रप्रस्थ ले गये। स्वामी जी को दवा व आराम की जरूरत थी परन्तु वह ठण्ड के मौसम में बुखार होते हुए भी काम कर रहे थे। उनका रोग बिगड़ गया और उसने विकराल रूप ले लिया। स्वामी जी को इन्द्रप्रस्थ से दिल्ली 12 किमी. आने में 12 घंटे लगे। कमरतोड़ बुखार ने उन्हें अपने शिकंजे में कस लिया था। डा. अंसारी उनका इलाज करने लगे और उन्हें ठीक हो जाने का आश्वासन देते थे। उनके इलाज से धीरे धीरे वह ठीक होने लगे। उनके एक अन्य चिकित्सक डा. सुखदेव जी ने कहा कि वह उन्हें दो दिनों में ठीक कर देंगे और स्वामी जी रोटी खाने लगेंगे। स्वामी जी से मिलने उनकी हत्या के दिन शुद्धि सभा के सचिव स्वामी चिदानन्द भी आये थे। स्वामी जी ने उन्हें कहा था कि मेरा स्वास्थ्य मेरा साथ छोड़ चुका है। स्वामी जी ने उन्हें कहा कि शुद्धि का कामरूकना रूकना चाहिये। हत्या वाले दिन स्वामी जी ने अपने पुत्र इन्द्र को बुलाकर कहा कि वह आर्यसमाज का इतिहास लिखना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने सामग्री का संचय व संग्रह भी किया था। उसका उपयोग कर आर्यसमाज का इतिहास अवश्य लिख देना। यह काम छूटना नहीं चाहिये। डा. नवदीप जी ने कहा कि अब्दुल रशीद द्वारा उन्हें धोखे से गोली मारने से एक घटां पहले उन्होंने उस दिन आये सभी मेहमानों को विदा कर दिया था। केवल धर्मपाल जी ही उनके पास थे। स्वामी जी ऊपर कक्ष में थे। नीचे कोई उनसे मिलने आया। बताया कि वह मुसलमान है और स्वामी जी से मिलना चाहता है। स्वामी जी ने उनकी बातें सुन ली और बोले कि उस व्यक्ति को आने दो। वह व्यक्ति अब्दुल रशीद था जो हत्या करने के उद्देश्य से आया था। वह स्वामी जी के पास आया और बोला कि उसे उनसे कुछ पूछना है? स्वामी जी ने बताया कि वह रूग्ण हैं, अभी बात नहीं कर सकेंगे। ठीक हो जाने पर आना, तब आपसे बातें करूंगा। इसके बाद हत्यारे ने पानी मांगा। स्वामी जी ने उसे पानी देने को कहा। पानी पीकर उसने अवसर देख कर अपनी पिस्तौल निकाल कर स्वामीजी पर पांच गोलियां दागी। तीन गोलियां स्वामी जी के सीने के पार हो गयीं। धर्मपाल ने उस हत्यारे अब्दुल रशीद को कस कर पकड़ लिया। वह हत्यारा तड़फता रहा परन्तु स्वयं को धर्मपाल से छुड़ा नहीं सका। बाद में पुलिस आने पर उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया। इस प्रकार देश, धर्म, धर्म रक्षा व वैदिक संस्कृति के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने प्राण देकर हुतात्माओं में सम्मिलित होकर अमर पद को प्राप्त किया।

आर्यसमाज धामावाला, देहरादून के ऋषि भक्त प्रधान श्री महेश कुमार शर्मा जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्मकथा कल्याण मार्ग के पथिक का उल्लेख कर उसके शेष भाग की भी जानकारी दी और कहा कि उन्होंने आगे के 8 वर्षों के जीवन की आत्मकथा आर्यसमाज बच्छोवाली में बैठकर लिखी थी। इसके बाद का भाग भी आपने लिखा था जो **‘‘सद्धर्म प्रचारक”** पत्र में प्रकाशित किया जाता रहा। सम्भवतः इसका शीर्षक **‘आप बीती जग बीती’** था। इसके प्रकाशन के लिए स्वामीजी ने अपने सहयोगी बाबू शिव प्रसाद जी को प्रकाशित करने का अनुरोध किया था। प्रधान श्री महेश कुमार शर्मा जी ने बताया कि उनके जीवन की सभी प्रमुख घटनायें उनके यशस्वी सुपुत्र इन्द्र जी ने **‘मेरे पिता’** नाम से पुस्तक लिख कर प्रकाशित कीं जो सम्प्रति उपलब्ध है। श्री शर्मा जी ने विद्वान वक्ता डा. नवदीप कुमार जी की प्रशंसा की और उनका धन्यवाद किया। आर्यसमाज के पुरोहित जी द्वारा शान्तिपाठ कराया गया। कार्यक्रम के समापन पर जलपान हुआ। आयोजन में बड़ी संख्या में स्त्री, पुरुष एवं श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम के बच्चे सम्मिलित थे। कार्यक्रम सफल रहा जिसके लिए आर्यसमाज के प्रधान व मंत्री जी बधाई के पात्र हैं। कार्यक्रम समाप्ती पर हमारी डा. नवदीप जी से बातचीत हुई। आपने बताया कि समयाभाव के कारण बहुत सी बातें अपने वक्तव्य में प्रस्तुत नहीं कर पाये जिसमें पटियाला केस का उल्लेख भी था। डा. नवदीप जी हमारे विगत 25 से अधिक वर्षों से परिचित एवं मित्र हैं। आपने ऋषि जीवन पर एक शोधपूर्ण पुस्तक **‘ऋषि दयानन्द और उनके पांच क्रान्तिधर्मी शिष्य’** लिखी है जिसे हमने पढ़ा है। इसे प्रकाशन हेतु डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी को दिया गया है। यदि इसका प्रकाशन हो जाये तो यह ऋषि भक्तों के लिए ऋषि जीवन पर उत्तम सामग्री होगी।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘देश की आन बान व शान के रक्षक शहीद उधम सिंह जी’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आज शहीद ऊधम सिंह (जन्म 26-12-1899, मृत्यु 31-7-1940, जीवन 40 वर्ष 7 महीने 5 दिन) की 117 वीं जयन्ती है। ऊधम सिंह जी हमें पंजाब की धरती सुनामख् संगरूर से मिले थे जहां से हमें विगत एक शताब्दी में लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, सरदार भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव जी आदि शहीद मिले हैं। सिख गुरुओं का अपना इतिहास है जिन्होंने धर्म की वेदि पर अपनी आहुतियां देकर सनातन वैदिक धर्म की रक्षा की है।

शहीद ऊधम सिंह जी ने अपना बलिदान देश के सम्मान की रक्षा के लिए दिया। उन्होंने जलियांवाला बाग के एक मुख्य अपराधी लेफिटनेंट गवर्नर माइकेल ओडायर को इंग्लैण्ड में जलियांवाला बाग नरसंहार की 31 वीं वर्षगांठ के दिन मारकर पूरा किया। 13 मार्च, 1940 को ईस्ट इंडिया एसोसियेशन और केन्द्रिय एशियन सोसायटी की ओर से लन्दन के कैक्सटन हाल में जलियांवाला बाग काण्ड की वर्षगांठ मनाई जा रही थी। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में माइकेल ओडायर आमंत्रित थे। ऊधम सिंह जी अंग्रेजी वेशभूषा में इस बैठक में पहुंच गये। उन्होंने अपना रिवाल्वर अपनी जैकेट की जेब में छिपाया हुआ था। यह रिवाल्वर उन्होंने मलसियान, जालन्धर, पंजाब के श्री पूरन सिंह बोघान से प्राप्त की थी। बैठक समाप्त होने पर ऊधम सिंह जी ने मंच पर बैठे हुए माइकेल ओडायर पर दो गोलियां चलाई जिससे वह वहीं पर ढेर हो गये। इस घटना में दो अन्य व्यक्ति भी घायल हुए थे। ऊधम सिंह जी ने घटना स्थल से भागने का प्रयास नहीं किया और अपने को स्वेच्छा से गिरिफ्तार करा दिया। 1 अप्रैल, 1940 को ऊधम सिंह जी पर माइकेल ओडायर की हत्या का अपराध लगाया गया। आप को मुकदमें के दौरान ब्रिक्सटन जेल में रखा गया जहां आपने 42 दिन की भूख हड़ताल भी की। आपकी भूख हड़ताल को जबरन तोड़ा गया। न्यायाधीश अटकिंसन की कोर्ट में 4 अप्रैल को आपके विरुद्ध मुकदमें की सुनवाई आरम्भ की गई थी। अपने बयान में ऊधम सिंह जी ने कहा कि ‘‘मैंने माइकेल ओडायर को इस लिए मारा क्योंकि मुझे उससे नफरत थी। वह हत्या के लायक ही था। जलियांवाला बाग नरसंहार का वह ही मुख्य अपराधी था। उसने मेरे देशवासियों की आत्मा को कुचलने की कुचेष्टा की थी। मैं 21 वर्षों से उससे बदला लेने की कोशिश कर रहा था। मुझे खुशी है कि मैंने अपना काम पूरा किया। मुझे मौत का डर नहीं है। मैं अपने देश के लिए बलिदान हो रहा हूं। मैंने अपने देशवासियों को अंग्रेजों के राज में भूखे मरते देखा है। मैंने इसका विरोध किया है जो कि मेरा कर्तव्य था। अपने देश और मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देने से बढ़कर मेरा और क्या सौभाग्य हो सकता है?’’

ऊधम सिंह जी को ओडायर की हत्या का दोषी पाया गया और उन्हें मौत की सजा सुनाई गई। 31 जुलाई, 1940 को उन्हें पैनटोनविली जेल में फांसी पर चढ़ाया गया और जेल में ही उनको दफना दिया गया।

आज होना तो यह चाहिये था कि आज सारे देश में उनकी जयन्ती मनाई जाती परन्तु हमारा आज का समाज भौतिकवादी और पश्चिमी तौर तरीकों वाला हो गया है। आज की नई पीढ़ी क्रिकेट और फिल्मी कलाकारों को ही अपना आदर्श मानती है। यह एक प्रकार का बौद्धिक पतन है। आवश्यकता पाश्चात्य विचारों की मृग मरीचिका को भूलकर वेदकालीन सत्य व ऋत नियमों व विचारों को जानने व उन्हें धारण करने की है। उसी से मनुष्य जीवन सार्थक एवं सफल होता है।

आज हम यदि स्वतन्त्र हैं तो यह मुख्यतः हमारे क्रान्तिकारी शहीदों की ही देन है। उनको याद रखना ही जीवन और भूल जाना ही मृत्यु है।

‘हे वतन हे वतन हमको तेरी कसम तेरी राह में जान् तक लुटा जायेंगे।

फूल क्या चीज है तेरे चरणों में हम भेंट अपने शिरों की चढ़ा जायेंगे।।’

आज यह भावना समाज में नहीं है। यदि उन दिनों भी न होती और आजकल के विवार ही होते तो शायद देश आजाद न होता।

आज जयन्ती पर हम शहीद ऊधम सिंह जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**